.....मम्मा पूछती है और दूसरे तरफ में कम्बाइण्ड पूछते हैं। ऐसे है ना– मात–पिता और दादा। माता तो गुप्त हो गई, बाकी बापदादा तो प्रत्यक्ष है। कोई सतसंग में या घर में बच्चों से कभी कोई पूछते ही नहीं हैं। बाप होगा तो अलग पूछेंगे, दादा होगा तो अलग पूछेंगे, दादी होंगी तो अलग पूछेंगी, माँ होंगी तो अलग पूछेंगी– ऐसे होता है ना। ये बातें कोई शास्त्रों में तो नहीं लिखी हैं। ये (बातें) हैं अनुभव की और भासना की। बच्चों को ये वण्डरफुल भासना आती है, जिस भासना के राज़ को कोई भी मनुष्य नहीं जान सकते हैं। कोई भी और धर्म वाले नहीं जान सकते हैं सिवाय तुम संगमयुगी ब्राह्मण कुलभूषणों के; क्योंकि यूँ तो प्रजापिता ब्रह्मा का नाम बाला है। प्रजा माना ही रचना, सो भी नई। तो नई रचना जब होगी तभी तो नया युग भी होगा तो नया धर्म भी होगा, सब नया ही होगा। तो ये सब नई बातें हैं। तो ज़रूर सिद्ध होता है कि ये जो गीता लिखी हुई है जिसमें ये अगड़म–बगड़म लिखा हुआ है, ये परम्परा से चला हुआ नहीं है। ये भी तुम ब्राह्मण बच्चे महसूस कर सकते हो, अनुभव कर सकते हो। समझते हो। वो तो बात ही वहाँ न्यारी है (कि) श्रीकृष्ण भगवानुवाच, अर्जुन प्रति युद्ध का मैदान। युद्ध का मैदान तो है, ये तो ज़रूर है; परन्तु युद्ध का मैदान ये है ही एक वण्डरफुल कि रावण पर युद्ध (है)। यूँ तो युद्ध के मैदान बहुत समय से (यानी) द्वापर से चले आए हैं। युद्ध का मैदान सतयुग–त्रेता में होता ही नहीं है। न रूहानी (युद्ध) रावण से है, न ही ज़िस्मानी (युद्ध) मनुष्यों का मनुष्यों से। सतयुग और त्रेतायुग में कोई भी (युद्ध) नहीं (है)। फिर बाकी है बाहुबल की लड़ाई। युद्ध का मैदान तो बहुत समय से चला आया है। सो भी बताया ना कि द्वापर से और द्वापर में भी बहुत समय के बाद जबकि (अन्य) धर्म वालों की वृद्धि हो और फिर एक/दो के ऊपर लड़ाई करें। जैसे बौद्धी हैं, तो बौद्धियों की तो कोई से लड़ाई हो नहीं सकती है। फिर आओ इस्लामि(यों की तरफ), उनके साथ भी कोई की लड़ाई हो नहीं सकती है। वो तो जब मनुष्य सम्प्रदाय बहुत होती है और फिर टेम्पटेशन होती है कोई के ऊपर चढ़ाई करने की तब (लड़ाई होती है)। फिर क्रिश्चियन भी ऐसे ही समझो कि जब तलक वो वृद्धि को न पाए हैं, पीछे ये लड़ाइयाँ शुरू होती हैं। समझो, कोई 1500 वर्ष हुए होंगे (तब) फिर कुछ न कुछ किस्म–2 की बाहुबल की लड़ाई होती है। ये तो तुम बच्चों को समझाया जाता है। यूँ तो लड़ाई बहुत समय से दिखलाते रहते हैं। कंस और कृष्ण की भी दिखलाते हैं। ऐसे दिखलाते हैं ना कि कंस को मारा है। तो अगर कंस को मारा तो कंस

की भी राजाई होगी, कृष्ण की भी राजाई होगी। कृष्ण को तो कहेंगे ही ज़रूर कि शहज़ादा था, राजाई होगी। कंस का क्या था? ये तो कोई है नहीं। कंस तो सिर्फ नाम है असुरों का ऐसे ही गाया हुआ। ये शास्त्रों में लिखा हुआ है तभी हम कंस कहते हैं। नहीं तो कंस का कोई अर्थ ही नहीं निकलता है। असुर है, रावण है, फिर उनकी ये सम्प्रदाय। कंस,जरासिंधी वो तो अभी की बात है। कंस,जरासिंधी वगैरह (इनका) कोई राज्य तो है नहीं। ये तो फिर रावण का राज्य कहेंगे। जब मनुष्य जो पापात्मा होते हैं, उनको ये शिशुपाल, फलाना (नाम) दे देते हैं। यहाँ तो बहुत समझने की बातें होती हैं। मनुष्य क्या समझते हैं हनुमान, फलाना। तुम बच्चे तो इन सब बातों से छूट गए हो। मनुष्य तो इन बातों में चारों तरफ भटकते रहते हैं। कोई भी बिचारों को पता नहीं है कि हम क्या करते हैं, किसकी पूजा करते हैं, क्यों धक्का खाते हैं। हाँ, इतना कहते हैं कि भगत जब बहुत भक्ति करेंगे तो भगवान आएँगे। सो तो बच्चे जानते हैं कि आधा कल्प का भक्तिमार्ग जब खलास होता है तो भक्तों की रक्षा करने भगवान को आना ही है ; क्योंकि भगत दुःखी हैं। भगत सुखी तो नहीं हुए ना। भक्ति सुख के लिए तो नहीं हुई ना ; क्योंकि भगत दुःखी हैं तब भक्तों की रक्षा अर्थ, भक्तों का रखवाला है भगवान। गीत में भी ऐसे है ना। रक्षा की जाती है (उनकी) जो मनुष्य बहुत दुःखी होते हैं। भक्ति दुःखी करती है ना। दर–2 भटकते रहते हैं, थक जाते हैं। इसलिए तो बाप आकर (पाँव) दबाते हैं ना। कहते हैं– बच्चे, बहुत थक गए हो? ड्रामा अनुसार अभी सब समझ गए कि आधाकल्प तुम बच्चों को भक्ति ज़रूर करनी है; क्योंकि रात है और सृष्टि के चक्र को भी फिरना है। वर्णों में भी ज़रूर आना है। ब्राह्मण वर्ण, देवता वर्ण, क्षत्रिय वर्ण, वैश्य वर्ण, शूद्र वर्ण में आना है ज़रूर। गाये गए हैं। गाये जाते हैं; परन्तु ये चक्र कैसे फिरता है, ये बिचारे कोई नहीं जानते हैं। जानते हो कि बरोबर ज्ञान सागर, पतित–पावन, फिर यही सहज राजयोग सिखलाने वाला; वो तो भगवान बैठ करके सिखलाएगा। तुम बच्चे जानते हो कि बरोबर जिसको ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर इत्यादि–2 कहा जाता है, बरोबर तुम उनसे पूरा वर्सा पाने का पुरुषार्थ कर रहे हो। अभी पुरुषार्थ पूरा ही करना है। समय तो बाकी थोड़ा है। अभी तो और सभी सगाइयाँ कैन्सल करके एवं देह सहित देह के सभी सम्बंधों को बाबा,मामा,चाचा,गुरू,गोसाईं,पति,पत्नी ये सभी (से) नाता तुड़ाते हैं। सिर्फ अपने साथ जोड़ते हैं; क्योंकि मेरे साथ जोड़ने से तुम बच्चे विकर्माजीत बनेंगे, पवित्र बनेंगे और फिर अपनी पवित्र दुनिया

का मालिक बनेंगे। तो देखो, सभी सम्बंध तुड़ाते हैं, एक से जुड़ाते हैं और युक्ति बताते हैं कि ऐसे–2 (करो)। (ये सम्बंध) जल्दी नहीं टूट जाते हैं। विकर्म पुरुषार्थ से विनाश करना है। यूँ (तो) भक्तिमार्ग में भी विकर्म विनाश होते हैं। बाबा ने समझाया है कि जब शिव के ऊपर बलि चढ़ते हैं तो जो विकर्म किए हुए हैं उनकी सज़ा भोगते हैं। फिर विकर्म शुरू हो जाते हैं; क्योंकि ये है ही माया की दुनियाँ। उसमें पुनर्जन्म फिर भी लेना ही पड़े। ये बरोबर है कि भक्तिमार्ग में शिव के ऊपर बलि चढ़ते हैं तो उसी समय में वो सज़ाएँ खा–2 कर कर्मातीत बन जाते हैं ; पर वापस नहीं जाएंगे। फिर उनको अच्छा जन्म मिलेगा। यहाँ तो तुमको योग से विकर्म विनाश करना है। काशी कलवट नहीं खाना है; क्योंकि उससे कुछ भी फायदा नहीं होगा। कोई कलवट भी खाएँगे तो ज्ञान नहीं है ना, योग भी नहीं है, तो क्या करेंगे, कहाँ जाएँगे। ये तो श्रीमत पर चलना है याद करने के लिए। बातें तो सभी विचित्र हैं ना। देखो, बाबा कैसे समझाते हैं! तुम भी कहेंगे बाबा समझाते हैं, ये भी कहते हैं बाबा समझाते हैं। अभी मनुष्य कैसे समझे कि ये भी कहते हैं कि बाबा समझाते हैं, ये भी कहते हैं कि बाबा समझाते हैं। तो ज़रूर इनका बाबा गुप्त देखने में आता है। ये तो बरोबर शिवबाबा है भी गुप्त। ये बच्चों से बापदादा की चिटचैट कहेंगे; क्योंकि कम्बाइण्ड हैं। .....हुसैन का पण्डा छुगू कहाँ है? (किसी ने कहा– ये सामने)....अपने–2 साथ में जिनको लाते हैं इनको बहुत अच्छा सुखाला रखना है। बाप तो आए ही हैं सुख देने के लिए तो बच्चों को भी हर एक को सुख देना है। सुख की मत कोई स्वीकार करे या न करे। बाप तो देंगे ना। बरोबर सुख की मत बाप देते हैं, फिर जितना जिसकी तकदीर में है वो मत उठाते हैं। नहीं तो फिर अपनी (मत) पर चलते रहते हैं।

.....ध्यानी की पार्टी। बुड्ढियाँ ये सुनती हैं? (किसी ने कहा– हाँ, ज्ञान सुनती हैं) यहाँ जो कुछ कहते हैं सुनती हो? बाबा ने क्या कहा? (किसी ने कहा– श्रीमत पर चलना)। हाँ। (म्युज़िक बजा)

(मम्मा ने कहा– मात–पिता, बापदादा का मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडनाइट) (गुडनाइट) अच्छी या मॉर्निंग अच्छा?

✷✷✷✷✷✷✷✷